नाम- डॉ. प्रदीप कुमार राय
पद- एसोसिएट प्रोफेसर, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम।
विषय- राजनीति शास्त्र
कक्षा- बी.ए. (प्रतिष्ठा) भाग- 01
सत्र- 2019- 20
पेपर- 01
दिनांक- 31.07.2020

टॉपिक- फेबीयनवाद की प्रकृति और कार्यक्रम

फेबीयनवाद का उद्देश्य भूमि और उद्योग में होनेवाले मुनाफे का लाभ समस्त समाज को पहुँचाना है और इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु फेबीयन विचारक निम्नलिखित उपाय अपनाने पर बल देते हैं –

(क) उद्योग विषयक सामाजिक कानून –
इस संदर्भ में उनका विचार है कि इन कानूनों में काम के घंटे कम करने, बेकारी बीमारी आदि के संकटों से मुक्ति पाने, न्यूनतम मजदूरी देने; सफाई और सुरक्षा तथा शिक्षा की व्यवस्था करनेवाले कानूनों का निर्माण किया जाये।

सार्वजनिक क्षेत्र में उनका विचार है कि सार्वजनिक उपभोग की वस्तुओं से सम्बन्ध रखनेवाले उद्योगों पर राज्य अथवा स्थानीय संस्थाओं का स्वामित्व स्थापित किया जाये।

उत्तराधिकार के क्षेत्र में इनके अनुसार उत्तराधिकार में प्राप्त होनेवाली विशाल संपत्तियों पर तथा भूमि और उद्योगों में लगायी गई पूंजी से होने वाली अनुपार्जित आयों पर कर लगाया जाये।

फेबीयनवादियों ने अपने विचारों के प्रचार हेतु लिखे भाषणों, लेखों और अन्य शांतिपूर्ण तरीकों का सहारा लिया। उनके द्वारा फेबीयन निबंध प्रकाशित किये गये और Fabian Tracts की एक श्रृंखला निकाली गई। उन्होंने सामूहिक उत्पादन, वितरण तथा विनिमय के प्रयोगों का अध्ययन करने के लिये 1884 में एक अनुसंधान विभाग की स्थापना की और समाजवादियों की शिक्षा के लिये Fabian Summer School की व्यवस्था की। उनके द्वारा राजनीतिक दलों से Fabian Clubs की स्थापना की गई और इंगलैंड में मजदूर दल की स्थापना में उनका प्रमुख हाथ था।

इस प्रकार समाजवाद को शांतिपूर्ण साधनों द्वारा विकसित और प्रतिष्ठित करने तथा इसे उग्र एवं हिंसक सामाजिक प्रवृत्तियों से मुक्त रखने में फेबीयनवादियों की सोच और पहल प्रशंसनीय थी।